वार्षिक 150/- रुपये अक्टूबर 2025 वर्ष 27 अंक 12 पृष्ठ - 28 मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

नैसर्गिक रुप से मनुष्य शाकाहारी है, मांसाहारी नहीं

सम्पादकीय

नैसर्गिक रूप से मनुष्य शाकाहारी है, मांसाहारी नहीं

यथार्थ में यह बड़े गहन अध्ययन का विषय है कि वस्तुतः मनुष्य का आहार क्या है? आज मनुष्य जिस तरह मांसाहार की ओर बढ़ रहा है, साथ ही देश से मांस निर्यात को बढ़ावा दिया जा रहा है और मांस की आड़ में गोमांस का निर्यात भारी मात्रा में किया जा रहा है, यह असंदिग्ध रूप से भारत जैसे आध्यात्मिक–अहिंसक (पूर्व में) राष्ट्र के माथे पर कलंक है। वास्तव में शाकाहार एवं फलाहार करने वाला मनुष्य यदि मांस जैसा अभक्ष्य, अपाच्य आहार करे तो उसकी बुद्धि पर भी प्रश्न चिह्न खड़ा हो जाता है। क्योंकि मांसाहार वैज्ञानिक, शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक आदि किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं है। वैज्ञानिक अनुसंधानों में यह अनेक बार प्रमाणित किया जा चुका है कि मानव की आंतरिक संरचना सिर्फ शाकाहार के ही अनुकूल है। मनुष्य की आतें और आमाशय केवल शाकाहार व फलाहार को ही पचाने में पूर्ण सक्षम हैं। एक विशेष बात यह भी है कि मनुष्य के पास मांसाहारी जीवों के समान वैसे दांत नहीं हैं जो कि मांस को चबाने के लिए अतिआवश्यक होते हैं। इससे भी यह सिद्ध होता है कि मनुष्य का आहार मांस नहीं है।

सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से देखें तो भी इस तथ्य से यह स्पष्ट है कि मनुष्य जिन प्राणियों के मांस को खाता है, वे सभी प्राणी उसके लिए नैसर्गिक रूप से अति उपयोगी और महत्वपूर्ण हैं। आर्थिक स्तर पर भी मांस अन्न से मंहगा ही होता है। मांसाहारी तर्क देते हैं कि मांसाहार बहुत स्वादिष्ट होता है, परंतु सच्चाई तो यह है कि मांस में कोई भी स्वाद नहीं होता। मांसाहार को स्वादिष्ट बनाते हैं उसमें डाले जाने वाले मसाले, जो कि विशुद्ध शाकाहार हैं। जब वास्तव में स्वाद मसालों में ही है तो उन मसालों का उपयोग शाकाहार में कीजिए और मांसाहार को त्याग दीजिए, जो सर्वोत्तम होगा। यह संपूर्ण मानवजाति के लिए कल्याणकारी और मंगलकारी भी होगा।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से तो मांसाहार सबसे ज्यादा घृणित और निन्द्य पदार्थ है। हमारे पवित्र ग्रंथों में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रुप से कहीं भी मांसाहार का समर्थन नहीं किया गया है। विभिन्न धर्मों में अनेक मत–मतान्तर के अनन्तर भी **अहिंसा परमो धर्मः** मत का सभी समर्थन करते हैं। अध्यात्म कहता है–सभी प्राणियों में आत्मा एक है और जो उस आत्मा के आवास–शरीर को कष्ट देता है, उसे काटता है, खाता है, यह तो वह धर्म के नाम पर अधर्माचरण ही कर रहा है। देवी–देवताओं, पैगम्बरों और मसीहा के नाम पर बलिदान का गीत गाने वालों को चाहिए कि वे अपनी जिह्वा के स्वाद पर अंकुश लगायें, अन्यथा ईश्वर उन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा। ईश्वर ने केवल मनुष्य को विशेष रूप से बुद्धि दी है, इसीलिए उसे इस सत्य की अनुभूति करना चाहिए कि आज हम जो क्रिया करेंगे, वही प्रतिक्रिया बनकर लौटेगी। आज यदि हमारी वजह से किसी जीव की चीत्कार निकलेगी तो निश्चित ही एक दिन हमें भी वही पीड़ा होगी और हमारे मुख से भी वैसी ही चीत्कार निकलना अवश्यंभावी है।

नैसर्गिक रूप से ही मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसका समाज से अटूट संबन्ध है। बुद्धि में सर्वश्रेष्ठ होने के नाते मनुष्य का यह परम कर्तव्य भी हो जाता है कि वह प्रकृति के नियमों का उल्लंघन न करे और अपने आहार–व्यवहार को संयमित रखे, लेकिन दुर्भाग्य से मनुष्य ने लोभ–लालच में आकर अपने आहार–व्यवहार को असंयत कर दिया, जिसके दुष्परिणामस्वरुप आज वह भयंकर बीमारियों एवं बड़ी–बड़ी विपदाओं से त्रस्त है।

"वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना का अवलंबन करने वाले भारतवर्ष में यदि लोग बेजुबान व निरीह प्राणियों की हत्या करके उनका मांस–भक्षण करते हैं तो बड़ी ही लज्जा के साथ कहना पड़ रहा है कि ऐसे लोगों की आत्मा निश्चितरूप से ही संवेदनशून्य हो चुकी है। क्योंकि जो दूसरे जीवों की पीड़ा को नहीं समझ सकते हैं वे सुखी और स्वस्थ कैसे रह सकते हैं? वस्तुतः मांस निर्यात की विकराल समस्या लोगों में बढ़ती मांसाहार की प्रवृत्ति से ही पैदा हो रही है। यदि मांसाहार के दुष्परिणामों से जन–जन को सचेत किया जाए तो यह समस्या स्वतः ही समाप्त हो जाएगी। **सत्य तो यह है कि मांसाहार इस राष्ट्र की बरबादी, सांप्रदायिक वैमनस्यता और विपन्नता का मूल कारण है।** अतः संपूर्ण देशवासी अपने जीवन से संकल्पपूर्वक मांसाहार को त्यागकर शाकाहार को अपनाएं। मांसाहार छोड़ने में ही हमारी, समाज की और भारत की समृद्धि, संपन्नता सन्निहित है। इस प्रकार की जीवनशैली अपनाने से गोमाता–गोवंश की हत्या और मांसभक्षण स्वाभाविक रूप से बंद हो जायेगा। साथ ही देश में चहुंओर सुख–शांति–समृद्धि स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगेगी। परमवैभवशाली भारत का आधार ही गोमाता–गोवंश रहा है और अभी भी है, यह ध्यान रहे।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष – 27 अंक–12 अक्टूबर – 2025 पृष्ठ – 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक : देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 8130049868 कार्या. 011–26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी
9811111602

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011–26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना

'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि

एक प्रति : रु. 30/–
वार्षिक : रु. 150/–
आजीवन : रु. 1500/–

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
जैविक सृष्टि की निरन्तरता का आधार है हमारा गोवंश	04
महान गोसेवक 'श्रीराम'	08
गोमाता हैं पृथ्वी का रक्षाकवच	09
अम्लपित्त व्याधि में पंचगव्य का विशेष लाभ	10
गौरक्षण-संवर्द्धन : एक महती आवश्यकता	12
गाय पर्यावरण के लिए वरदान	18
अन्धे गोवंश के प्रति पुत्रभाव	20
Cow Dung in Green Technology From Biogas to Eco-Bricks	21
Cow Wealth : Our True Wealth, Our Identity	24

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं–

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर – 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011–26174732

हरिशंकर दीक्षित 'पथिक'

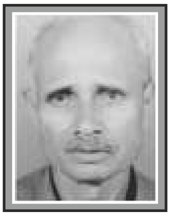

जैविक सृष्टि की निरन्तरता का आधार है हमारा गोवंश

हमारे आर्षग्रन्थों के अनुसार अखिल ब्रह्माणीय ग्रह–नक्षत्रों की रचना ईश्वरीय कौतुक है, जो ईश्वर द्वारा अनन्त आकाश के अत्यल्प भाग में की गयी है। इसमें अनेक नीहारिकायें अपने सौरमण्डलों सहित उस महापिण्ड के केन्द्र का परिभ्रमण कर रही हैं जिसमें विस्फोट होने से इनका निर्माण हुआ है। हमारी धरती आकाशगंगा नामक नीहारिका के एक सौरमण्डल का अंग है, जिस पर ईश्वर ने अनुपम विविधतायुक्त जैविक रचना की है। इस जैविक रचना की विविधता वनस्पतियों से प्रारम्भ होकर मनुष्य तक चौरासी लाख की संख्या के साथ पूर्ण हुई है। इसकी अन्तिम दो रचनायें ईश्वर को अतिप्रिय और समग्र जैविक सृष्टि के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह रचनायें क्रमशः गाय और मनुष्य हैं। गोवंश की रचना ईश्वरीय माया प्रकृति के सहायक सहचर और मनुष्य की आजीविका के मूलाधार रूप में तथा मनुष्य की रचना गोवंश की रक्षा, पालन–पोषण करते हुए इसी की शक्ति–सम्पदा का समुचित उपयोग कर जीवनयापन करते हुए प्रकृति के उपकरण पर्यावरण के पँचांगों को शुद्ध पुष्ट बनाये रखने के लिये की गयी है। इसीलिए ईश्वर ने मनुष्य को सर्वगुण सम्पन्न स्वरूप में रचा है। इसकी उन्नतिशील कुशाग्र बुद्धि इसका सर्वोत्तम गुण है, जिसके आधार पर इसने सृष्टि रचना के ईश्वरीय हेतु को जाना और मानव कर्तव्यों का निर्धारण किया। यही कर्तव्य एक वचनीय संज्ञा मानवधर्म के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

हमारे पूर्वजों ने मानव समाज को व्यवस्थित रूप देने के लिए संविधान का निर्माण किया, जो मानव धर्मशास्त्र के रूप में ख्यात हुआ। यह संविधान संसार का आदिकालीन संविधान है जो आज अपने मूल स्वरूप में अनुपलब्ध है। मानव धर्मशास्त्र के अनुसार धरती प्रकृति और गाय हमारी आदि मातायें हैं। धरती हमारा अन्नौषधियों से पोषण करती है, प्रकृति हमारी निरन्तरता कल्पान्त तक बनाये

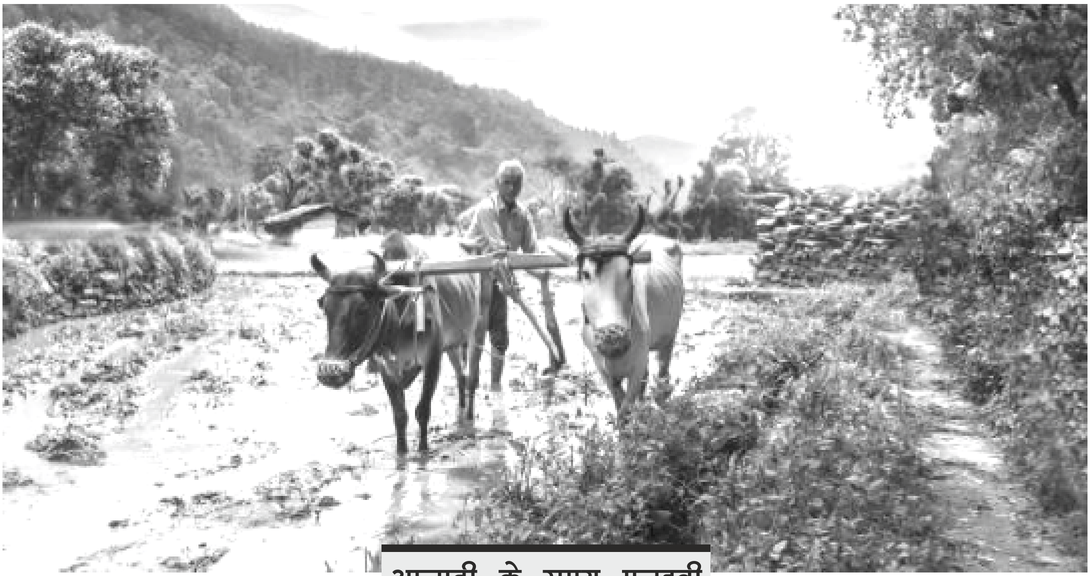

रखती है और गाय प्रकृति की सहायक सहचर है जो पर्यावरण को शुद्ध रखने के साथ ही मानव जीवनयापन का मूलाधार भी है। इसीलिये गोसेवा–पूजा मनुष्य का परम धर्म माना गया है। वैदिक देवी–देवता तैंतीस कोटि माने गये हैं, जो गोमाता के अंग–प्रत्यंगों में वास करते हैं। प्रत्येक के गुण भिन्न होने के कारण इन्हें विभिन्न कोटियों में स्थान दिया गया है। कोटि गुणवाचक संज्ञा है और इसका एक अर्थ करोड़ की संख्या होने से भ्रमित होकर देवताओं की संख्या तैंतीस करोड़ मान ली गयी है जो अनुचित है। अग्नि, वायु, जल और इन्द्र आदि वैदिक देवता हैं। पौराणिक इन्द्र और वरुण आदि वैदिक देवताओं के नामधारी मात्र हैं; ऐसा वेदज्ञ आचार्यों का मत है जो सर्वथा उचित प्रतीत होता है और पौराणिक इन्द्र के आचरण से स्पष्ट भी है।

द्वापर में बचपन से ही क्रान्तिकारी गोपालकृष्ण ने किशोरावस्था तक पहुँचते ही पौराणिक इन्द्र को गोरक्षा हेतु दी

आजादी के समय मजहबी आधार पर देश का बंटवारा होने के पश्चात् शेष हिन्दुस्तान में गोवंश का संकट समूल समाप्त हो जाना चाहिये था, किन्तु तत्कालीन शासक दल ने मजहबी आधार पर आबादी की अदला–बदली न करके गोमांस भक्षियों को उनके देश में जाने के आधार को ही ध्वस्त कर दिया। इस प्रकार गोवंश पर संकट ही नहीं हमारे देश पर भी अनावश्यक जनभार जो पाकिस्तान जाना था, लगभग पूरा बना रहा।

जाने वाली हवि को बन्द करा दिया था, क्योंकि इन्द्र गोकुल के गोवत्सों का हरण करने वाले कंस के यवन सैनिकों, वृकासुर–शकटासुर आदि से गोवत्सों की रक्षा करने में असमर्थ सिद्ध हुआ था। गोपाल कृष्ण ने अपनी बुद्धिमत्ता से व्यूह रचकर इन यवनों का बधकर गोवत्सों पर व्याप्त संकट को दूर किया था। इसके उपरान्त गोवंश की वृद्धि हेतु गोवर्धन व्रत–पूजा का अनुष्ठान गोवर्धन पर्वत पर प्रारम्भ किया गया। समस्त ग्वाल व्यूह रचकर गोवंश की सुरक्षा करने लगे तो कंस के यवन सैनिकों का साहस ही नहीं हुआ कि वे गोवत्सों को अपहृत करें। इससे पूर्व वे गोवत्सों का अपहरण कर उनकी हत्याकर शकट में लादकर ले जाते थे। इनके नायक का नाम शकटासुर था, जिसका वध गोपालकृष्ण ने व्यूह रचकर किया था। पुराणों में इसका वर्णन अलंकारिक रूप में होने के कारण ही लोग गोवर्धन व्रत–पूजा के महत्व से अपरिचित हैं।

किशोर गोपालकृष्ण ने स्वयं आचरण करते हुए गोवंश की रक्षा के लिये समस्त ग्वालों को प्रेरित कर गोवंश की रक्षा करना मनुष्य का प्रथम धर्म है, ऐसी शिक्षा दी, जो अभूतपूर्व थी। इसी शिक्षा का अनुसरण करते हुए हमारे देश में लोग गोरक्षा हेतु अपने प्राण तक न्योछावर करते आये हैं। हमारे देश पर इस्लाम के आक्रमण के साथ ही हमारे गोवंश पर फिर से संकट

उत्पन्न हुआ। इन गोमांस भक्षियों के कारण गोवंश की वृद्धि में ह्रास होने लगा। विशेषरूप से नरवत्सों की हत्या होने से कृषि क्षेत्र में बैलों की कमी हुई। इस कारण चार—छः और आठ बैलों द्वारा खींचे जाने वाले हलों का चलन बन्द हो गया और दो बैलों द्वारा खींचे जाने वाले एक फाल का हल ही चलन में बचा। इस कारण कृषि कर्म में अधिक मानव श्रम तथा समय लगने लगा। अँग्रेजों के पदार्पण ने **''करेला नीम चढ़ा''** कहावत चरितार्थ करते हुए गोवंश के संकट को और बढ़ा दिया।

आजादी के समय मजहबी आधार पर देश का बंटवारा होने के पश्चात् शेष हिन्दुस्तान में गोवंश का संकट समूल समाप्त हो जाना चाहिये था, किन्तु तत्कालीन शासक दल ने मजहबी आधार पर आबादी की अदला—बदली न करके गोमांस भक्षियों को उनके देश में जाने के आधार को ही ध्वस्त कर दिया। इस प्रकार गोवंश पर संकट ही नहीं हमारे देश पर भी अनावश्यक जनभार जो पाकिस्तान जाना था, लगभग पूरा बना रहा। इससे हमारे देश के संसाधनों का एक भाग हमारे वास्तविक नागरिकों से छिनता रहा और भीषण आर्थिक संकट के साथ ही बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न होती गयी। हमारे नागरिकों का भाग वे मजहबी उन्मादी हड़पते रहे जिन्होंने मजहबी आधार पर देश का विभाजन कराया था। सत्य तो यह है कि यह मजहबी उन्मादी अपनी दीर्घ योजना ''एक और विभाजन'' पर कूटनीतिक व्यूह रचकर कार्य कर रहे थे, जिसे हमारे अदूरदर्शी—अविवेकी कर्णधारों ने जानबूझकर अनदेखा किया। उनकी इस मूर्खता का कुफल हमारा देश तबसे अब तक भोग रहा है, यह हम सब प्रत्यक्ष देख रहे हैं।

इन गोमांस भक्षियों के अपने देश पाकिस्तान चले जाने से हमारे गोवंश की हत्या होने का संकट लगभग समाप्त हो जाता। जो बचता भी उसे हम समझा—बुझाकर या मनाकर समाप्त कर देते। किन्तु आबादी की अदला—बदली न होने से ऐसा नहीं हो सका और हमारे गोवंश की हत्या माँस के लिये होती रही। हमारे अविवेकी—अदूरदर्शी कर्णधारों ने अंग्रेजों और मुसलमानों के कूटजाल में फँसकर देश को ऐसे भँवर में फँसा दिया है जिससे निकलने का मार्ग है ही नहीं। हमारे सामने एक ही उपाय है कि हम संगठित होकर आत्मरक्षा का प्रयास करते रहें, अर्थात् पुनः देश विभाजन की मजहबी योजना को सफल न होने दें। दुर्भाग्य से ऐसा होने में हमारे कुछ स्वार्थी— सत्तालोलुप राजनेता ही बाधक हैं। इनमें से अनेक स्वयं को गोपालकृष्ण और हलधर बलराम का वंशज मानते हैं किन्तु गोपालकृष्ण की जन्मभूमि मन्दिर पर विधर्मियों के अधिकार का समर्थन करते हैं और गोवंश को मात्र पशु भर ही मानते हैं। गोवंश

की महत्ता तो गूढ़ बात है, इन्हें तो इसके महत्व तक का ज्ञान नहीं है।

गोवंश पर छाये गहन संकट की मूल उत्तरदायी हमारी सरकारें रही हैं, जिन्होंने परम्परागत कृषि यन्त्रों में आवश्यक सुधार करके कृषि कार्य को सरल श्रम–साध्य बनाने का कार्य न करके मशीनी कृषि यन्त्रों को प्रोत्साहन दिया। साथ–ही–साथ हमारे बुद्धिशील विचारक सरकार की चापलूसी करते हुए कर्तव्यविमुख होकर बुद्धिजीवी बनते गये। एक और प्रमुख वर्ग हमारे धर्माचार्यों का है जिसने इस सम्बन्ध में अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया। हमारे चारों शंकराचार्य गोरक्षा हेतु जनजागृति के लिये एक साथ मिलकर पूरे देश में भ्रमणशील हुए हों ऐसा मैंने कभी नहीं सुना। मठों में रहकर प्रवचन देने मात्र से ऐसे महत्वपूर्ण कार्य नहीं सम्पन्न होते, इनके लिये सर्वस्व बलिदान तक देना पड़ता है। हमारे शीर्षस्थ धर्माचार्यों ने कभी भी एक जुटता का प्रदर्शन गोवंश की रक्षा हेतु प्राणपण से किया हो ऐसा

देखने–सुनने में नहीं आया। यदि करते तो गोवंश–आज भी पूर्व की भाँति प्रतिष्ठित होता जो धर्माचार्य मुखर थे वे सरकारों पर प्रभाव नहीं डाल सके। इन्दिरा सरकार ने इनका कठोरतापूर्वक दमन किया था।

हमारे देश के मन्दिरों में अकूत धन सम्पदा है। हम चाहें तो उस धन का उपयोग गोरक्षण–संवर्धन के लिए करते हुए लाखों लोगों को रोजगार भी दे सकते हैं। ऊसर भूमि क्रयकर गोवंश के आश्रय स्थल बनाकर उन्नत हलों और अन्यान्य कृषि यन्त्रों के निर्माण के साथ ही उन्नत कोल्हुओं का निर्माण करवाकर गोवंश की शक्ति सम्पदा का समुचित उपयोग करते हुए ही गोरक्षा तथा इनका पालन–पोषण किया जा सकता है। हजारों एकड़ वन हमने कृषि के लिये काटकर नष्ट कर दिये, जिनमें मशीनी हलों से रासायनिक उर्वरकों द्वारा कृषि की जा रही है। इन पर उन्नत हलों–यन्त्रों द्वारा भी कृषि की जा सकती है।

सत्य तो यह है कि निजी सामाजिक तथा सरकारी गोआश्रय स्थल गोशक्ति का उपयोग न कर पाने के कारण अतिसीमित संख्या में कुछ उन्नत नस्ल की गायों का पालन ही भलीभाँति कर पाते हैं। नर वत्सों की शक्ति के उपयोग का प्रबन्ध यहाँ न होने के कारण यह व्यर्थ ही नष्ट होती रहती है। कृषि या कुटीर उद्योग, जैसे तेल–गुड़ उद्योग आदि में नर वत्सों की भूमिका महत्वपूर्ण है जो आदिकाल से चली आ रही है। इसी आधार पर हमारे पूर्वज अपना जीवनयापन करते रहे हैं। उस काल तक धरती प्रकृति और गोवंश के सन्तुष्ट होने के कारण समग्र जैविक सृष्टि सुखी थी। बाढ़, सूखा जैसी आपदाओं में अभाव होने पर उसे झेलने में समस्त प्राणी लगभग सक्षम थे। यह अभाव अल्पकालिक होता था जो गोवंश की कृपा और आशीर्वाद के बल पर सहन कर लिया जाता था।

उपरोक्त लेख का आशय यह है कि अभी समय है हम चेत जायें और अपनी भावी सन्तानों की भलाई के लिए गोवंश को अपने घर – परिवार में पुनर्प्रतिष्ठित कर उसकी शक्ति–सम्पदा का सदुपयोग करके धरती और प्रकृति को प्रसन्न कर उनके कोप से बचें; अन्यथा गोवंश का विनाश समग्र धरती के विनाश का कारण बनेगा और इसी धरती पर हमारा भी बसेरा है।

पूजा पाराशर (कवयित्री, स्वतंत्र लेखिका)

पावन पर्व विजयादशमी पर विशेष

महान गोसेवक 'श्रीराम'

"गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किंचिदिहाच्युत।।
कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम्।।"

(अनुशासन. ५१/२६–२७)

"महर्षि च्यवन ने राजा नहुष से कहा – अपनी मर्यादा से कभी च्युत न होने वाले हे राजेन्द्र! मैं इस संसार में गौओं के समान दूसरा कोई धन नहीं देखता हूँ। वीर भूपाल! गौओं के नाम और गुणों का कीर्तन तथा श्रवण करना, गौओं का दान देना और उनका दर्शन करना आदि की शास्त्रों में बड़ी प्रशंसा की गयी है। ये सब कार्य सम्पूर्ण पापों को दूर करके परम कल्याण की प्राप्ति कराने वाले हैं।"

"रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाए पर वचन न जाए" बात जब वचन की आती है तो तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य **'श्रीरामचरितमानस'** की ये पंक्तियाँ हर देशवासी के जिह्वा पर होती हैं। **'रघुकुल'**, जिसने अपनी प्रजा की रक्षा, सुरक्षा, सेवा और समृद्धि हेतु अपने संपूर्ण जीवन को न्यौछावर किया; जहाँ वचन का मोल सदा प्राणों से भी अधिक रहा; जहाँ गोमाता को सर्वोच्च स्थान दिया गया; उसका माता की भाँति सम्मान और पूजा की गई। श्रीराम ने भी इसी रीति का अनुसरण किया और अपने पूर्वजों के नाम और सम्मान को बनाए रखा। समय बदला, पीढ़ी बदली परंतु सत्कार्य, सद्भावना, कर्तव्य–निष्ठा इस कुल की कभी भी, किसी कारण नहीं बदली। यही कारण है कि आज भी यह 'कुल' पूजनीय–वंदनीय है।

यह कथा उस समय की है जब चारों भाई राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न, शस्त्र व शास्त्र की शिक्षा पाने हेतु गुरुकुल जाते हैं।

एक बार शयन के समय रात्रि में गुरु वशिष्ठ जी और पत्नी गुरुमाता अरुंधती चारों भाइयों से मिलने गईं। वहाँ राम को न पाकर, उन्होंने तीनों भाइयों से पूछा कि राम कहाँ है? वे कहने लगे – 'गुरुमाता, हम भी यही बात कर रहे हैं कि इस समय राम भैया कहाँ गए हैं? हम बस उन्हें ढूँढ़ने ही जा रहे हैं।' गुरु माता ने कहा – 'तुम यहीं रुको, मैं देखती हूँ।'

इधर, राम गोमाताओं को चारा–पानी दे रहे थे।

नंदिनी, सुरभि बर्सला और मैत्री गोमाताओं के साथ अपनी भावनाओं का आदान–प्रदान कर रहे थे। राम गायों से बात करते हुए कहते हैं – 'आज मैं अभ्यास में इतना व्यस्त रहा कि आपके पास आ ही नहीं पाया। मैंने हर दिन दो बार आप सब से मिलने का वचन दिया है तो देर से ही सही, आना ही था!'

जब राम गायों से बात कर रहे थे, उसी समय गुरु माता वहाँ पहुँची और राम से कहने लगीं – **'राम तुम्हारा प्रेम अद्भुत है! इस समय गोमाताओं के पास अपने प्रेम को व्यक्त करने आए हो! तुम महान हो!! अपनी निद्रा को त्याग कर, यहाँ इनका ख्याल रख रहे हो!'**

राम मुस्कुराते हुए बोले – 'गुरुमाता यह मुझे बहुत प्यार देती हैं। जब मैं इनके पास होता हूँ तो महसूस होता है कि कौशल्या, सुमित्रा और कैकयी माताएँ मेरे पास हैं। इन गोमाताओं का प्रेम – माताओं का प्रेम है। इनमें और माताओं में कोई भेद नहीं है।'

यह सुनकर गुरुमाता अति प्रसन्न होती हैं और कहती हैं – **'राम तुम्हारा गोमाता–प्रेम अति श्रेष्ठ है। गो–सेवा एक महान सेवा है और तुम महान गो सेवक हो!'** न **'रघुकुल'** परंपरा टूटी, न ही उसका **'वचन'**, कुल की गाथा सदियों से अमरता को प्राप्त है। पीढ़ियाँ बदलती गईं परंतु परंपरा ने अपना रूप कभी नहीं बदला, अपने पूर्वजों के द्वारा दिखाए गए मार्ग और उनकी शिक्षाओं का नई पीढ़ी ने उसी निष्ठापूर्वक पालन किया, अतः उन्होंने भी संसार में यश व गौरव प्राप्त किया।

भारतीय ऋषि–मुनियों, संतों व पूर्वजों की शिक्षाएँ हमें जीवन–दर्शन देने के साथ सुख, समृद्धि, आनंदमय जीवन का अनुभव कराती हैं और साथ ही जीवन के परम उद्देश्य **'परम् मोक्ष'** की दिशा प्रशस्त करती हैं।

"तुलसी ममता राम सों, समता सब संसार।
राग न रोष न दोष दुख, दास भए भव पार।।"

(तुलसीदास, दोहावली पृष्ठ ४०)

तुलसीदास जी कहते हैं कि जो श्रीराम से माँ के समान प्रेम करते हैं और सारे संसार को समान भाव से देखते हैं, जिनका किसी के प्रति राग–द्वेष, दोष और दुःख का भाव नहीं है, श्री राम के ऐसे भक्त भव सागर से पार हो जाते हैं।

गोमाता हैं पृथ्वी का रक्षाकवच

हमारे वेद कहते हैं कि गोमाता लक्ष्मी है, सरस्वती है, दुर्गा है और धन्वन्तरि है। गोबर में लक्ष्मी का निवास है। दूध, दही में सरस्वती का निवास है। गोबर से जो अखंड ऊर्जा मिलती है उसी के कारण यह दुर्गा है। पंचगव्य के कारण धन्वन्तरि है। इसलिए वेद कहता है, अगर पृथ्वी को बचाना है तो गाय की शरण में जाओ। गोमाता पृथ्वी का रक्षा कवच है।

गोमाता सबका कल्याण करने वाली हैं। इसलिए जिसके हृदय में गौ–भक्ति नहीं, वह भारत का ही द्रोही नहीं है, बल्कि इस पृथ्वी का भी द्रोही है। वर्तमान समय में **रघुनाथ मशेलकर नाम के ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक** ने गो–विज्ञान के बारे में शोध किया। मिसाइल मैन कहे जाने वाले भारतीय वैज्ञानिक एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम भी इस गो–विज्ञान के ऊपर शोध और प्रयोग के समर्थक थे। उनके अनुसार अगर **भारतीय (नस्ल) मूल की गाय का संवर्धन किया जाये तो पाँच प्रकार की सुरक्षा गारंटी हो सकती है – खाद्यान्न, आरोग्य, अर्थ, पर्यावरण और इन सबके साथ राष्ट्र व समाज की सुरक्षा।**

अब गाय की महत्ता कृषि वैज्ञानिक भी मानने लगे हैं। इसलिए गाय को राष्ट्रीय प्राणी घोषित किया जाये, ताकि गोहत्या करने वाले के ऊपर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा चलाया जा सके। गोचरभूमि को खाली कराया जाये। इसके लिए विशेष गोमाता जोन बनाया जाये। यदि कैलिफोर्निया में 90 हजार गायों की गौशाला चल सकती है तो क्या हमारे देश में एक–एक प्रखंड पर एक–एख लाख गायों की गौशाला नहीं चल सकती है? यह विचारणीय है।

– मधुभाई कुलकर्णी, संघ प्रचारक

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

अम्लपित्त व्याधि में पंचगव्य का विशेष लाभ

शरद ऋतु का आगमन हो चुका है। शरद ऋतु में निसर्गतः पित्त का प्रकोप होता है। अतः मनुष्य शरीर में भी अपनी–अपनी प्रकृति के अनुसार कम या अधिक पित्त बढ़ने के कारण उत्पन्न लक्षण शरीर पर आ सकते हैं। आयुर्वेद ने शरद ऋतु में आयुर्वेद चिकित्सक के मार्गदर्शन का लाभ लेते हुए ''विरेचन'' नामक पंचकर्म करने का सुझाव दिया है। प्रत्येक मनुष्य इसे संपूर्ण कर सकेगा या नहीं, उन्हें उसके लिए विशेष प्रयास करने की आवश्यकता हो सकती है। परंतु रात्रि में सोते समय लगभग सौ मिली. देसी स्वस्थ शहद को गरम दूध में 10/15 मिली देसी गाय के दूध से बना मक्खन से बनाया हुआ घी डालकर सोते समय चिकित्सक के मार्गदर्शन में सेवन करने से लाभ हो सकता है। निम्नलिखित रूग्णानुभव गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र के नागपुर स्थित रूग्णों के हैं –

1. रूग्णा सौ.वि.म., 58 वर्ष स्त्री 10/06/13 को 7–8 साल से पेट भारी लगना, वाम पाद शूल, पेट फूलना, कटिशूल, पैरों पर सूजन, पार्ष्णिशूल, तलपैर बधिर होना और ज्यादातर अम्लपित्त की शिकायत लेकर धंतोली स्थित गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र के चिकित्सा केंद्र में पहुँची। मौसम बदलने के समय पर पेट साफ नहीं होता था। H/O गर्भावस्था में Blood Pressure बढ़ा था। रजोनिवृत्ती 32 वर्ष में, 1988–89 से BP की दवाई शुरू है। रूग्णा के लक्षण देखते हुए और उसकी पित्त–वात प्रकृति देखकर उन्हें पंचतिक्त घृत, लघु सूतशेखर रस, हल्दी घनवटी सेवन और नारायण तेल का बाहय उपयोगार्थ चिकित्सा दी। पंचकर्म में स्नेहन–स्वेदन–योगक्रम बस्ती लेने के लिए सलाह दी। वर्ष में एक बार योगक्रम बस्ती और समयानुरूप मात्रा बस्ती रूग्णा लेती है। भोजन में बताए हुए पथ्य नियमित रूप से पालन करती है। रोज College से आने के बाद पैर दुखना और पेट का भारीपन एकदम कम हो गया। अम्लपित्त की शिकायत भी खत्म हो गयी है। रूग्णा हमारे यहाँ की चिकित्सा से संतुष्ट है।

2. रूग्ण चे. खा., 42 वर्ष पुरुष, रुग्ण मध्यम वयस्क है। रोज के काम का स्वरूप बैठक का होने से पेट की शिकायत हरदम रहती है। बैठकर लिखना अथवा Computer पर काम करने से गर्दन और पीठ का दर्द हमेशा रहता है। सायटिका का भी कभी–कभी दर्द तीव्र प्रमाण में होता है। पेट में भारीपन, पेट साफ न होना पूरे दिन भर उत्साह न रहना, ऐसी शिकायतें थीं। पंचतिक्त घृत, हिंग्वाद्य घृत, लघुसूतशेखर रस, दशमूल काढ़ा, बलादि तेल से मालिश, नारायणतेल और खानपान का परहेज बताया। शारीरिक व्यायाम की आवश्यकता थी। पथ्य पालन से और योगासनों का

नियमित व्यायाम करने से रूग्ण को उपरोक्त लक्षणों से राहत मिली है। रूग्ण चिकित्सा केन्द्र में आकर दवाईयां लेकर मिलने वाले फायदे से संतुष्ट है।

3. रुग्णा सौ.अ.ग., 46 वर्ष, स्त्री, रुग्णा मध्यम वयस्क है। हमारे ही केन्द्र में वह परिचारिका है। यहाँ काम करने लगी, उसे रोज In healer का उपयोग करना पड़ता था। सायकिल से आने पर साँस फूलती थी और कभी अस्पताल में साँस लेने में कष्ट होने से भरती करना पड़ता था। डॉ. भोजराज ने बस्ती, मालिश इन पंचकर्मों के साथ गोमूत्र आसव और बिभीतकावलेह लेने को कहा। रुग्णा की आर्थिक, मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। बच्चों में 2 जीवित हैं। 1 लड़का जन्म के बाद 10 दिन में गुजर गया। दूसरी डिलिव्री भी Normal हुई। तीसरी Twins Delivery ceasarian से हुई। उसमें से 1 लडकी 4–5 दिनों में ही गुजर गई। पेशेंट Domestic Violence की शिकार है। इस चिकित्सा से वह महीने में एखादबार In healer का उपयोग करती है। काफी हद तक उसकी परेशानी कम हुई है। दूसरा अनुभव ऐसा आया कि सायकिल से रात में घर जाते वक्त दाहिनी आँख में कीड़ा गया। निकाला ही नहीं और जलन होने पर आँखों को मसल दिया। रात में डॉक्टर के पास जाने का वक्त नहीं मिला। उसे गोघृत आँखों पर लगाने के लिए कहा। दूसरे दिन आँखों की सूजन और जलन कम हुई। तीसरे दिन और भी सूजन कम हुई। लगातार दो–तीन दिन आँखों से पानी बहता रहा। आँखें चार दिनों में स्वस्थ हो गईं। साधारण सी दवाई से उसकी आँखें ठीक हो गईं। अपने शारीरिक रोगों से अब वह काफी ठीक है और संतुष्ट भी है।

4. अ.ब.क (पाठक), 49, पुरुष, 31 दिसंबर 2021 को रुग्ण कामधेनु पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र के लेण्ड्रा पार्क शाखा में आए। लगभग 10 साल से जीर्ण प्रतिश्याय से पीड़ित थे। सुबह उठते समय छीकें आती थीं। धूल से संपर्क में आना, अगरबत्ती, इत्र की गंध से छीकें बढ़ती थीं। गले में कुछ है ऐसा irritation रहता था। धूल के संपर्क में आने से छीकें बढ़ती थीं। अगर ज्यादा दिन यह चलता रहा तब खाँसी होने लगती थी। इनका कार्य Field work का है। माताजी को Hypertension एवं Allergy की बीमारी थी। पिताजी का देहान्त Septicemia से हुआ। रोज सुबह 3 ग्लास पानी पीते थे। अब कम किया है। पहले प्रचुर मात्रा में रोज दही का सेवन करने की आदत थी। नियमित शाम को walk करना चालू ही था। गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार द्वारा निर्मित पचंगव्य घृत, गोमूत्र आसव, हिंग्वाद्य घृत, सेवन हेतु बताया गया। सरसों तेल का अभ्यंग एवम् गोमय तैल का नस्य, साथ ही हल्दी काढ़ा में कामधेनु गोमूत्र अर्क मिलाकर उसका कुल्ला करने के लिए बताया। सबेरे प्रचुर मात्रा में पानी पीना बंद कर दिया और रोज का दही सेवन भी बंद करा दिया। च्यवनप्राश सेवन बताया गया। गत छह महिनों से एन्टी एलर्जीक दवाइयां लेना बंद हुआ है। गले में खराश भी कम हुई है। रुग्ण पथ्य कर रहा है और लगभग 15–20 दिनों में 70 प्रतिशत लाभ हुआ है। रुग्ण यहाँ की चिकित्सा से पूर्ण संतुष्ट है।

शरद ऋतु में पित्त प्रकोप के कारण त्वचा पर एलर्जी या अम्लपित्त की तकलीफ बढ़ना सामान्य बात है। पंचगव्य आयुर्वेदिक औषधियों में लघूसूतशेखर रस, पंचतिक्त घृत आदि औषधि का लाभ ले सकते हैं। ये औषधियां अब गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र के ऑनलाइन शॉप में भी उपल्ध हैं– "govigyan shop.com"

जगदीश राज भाटिया

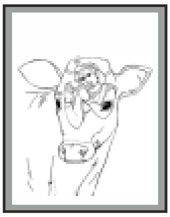

गौरक्षण-संवर्द्धन एक महती आवश्यकता

पूर्व काल में हिन्दुस्तान में गाय ही एक मात्र कामधेनु थी, सारी खेती का आधार स्तम्भ और जनमानस का सबसे अच्छा साथी और करोड़ों मनुष्य को पालने वाली मूर्तिमंत गोमाता थी। गाय की रक्षा ही ईश्वरीय मूक सृष्टि की रक्षा थी और अभी भी है। भारत वर्ष का सनातन धर्म ही गौरक्षण, गौपालन और गौसंवर्धन है, इसमें नया कुछ भी नहीं है। गौ का आध्यात्मिक तथा धार्मिक महत्व भौतिक साधनों से चाहे आज किसी को समझ में न आये, पर है निर्विवाद ही। गोमाता का दर्शन एवं उन्हें नमस्कार करके परिक्रमा करने से सातों द्वीपों सहित भूमण्डल की प्रदक्षिणा हो जाती है। गोमाताएं समस्त प्राणियों की माता एवं सारे सुख देने वाली हैं। वृद्धि की आकांक्षा करने वाले मनुष्य को नित्य गायों की प्रदक्षिणा करनी चाहिए। सर्वदलीय गौरक्षा सम्मेलन में राजर्षि पुरुषोत्तम दास जी टण्डन ने शास्त्र, पुराण और हिन्दू धर्म का हवाला देते हुए मनुष्य और गौ के संबंध को अनादिकाल से माता पुत्र का संबंध माना है। महामना पं. श्री मदन मोहन जी मालवीय भी इस पक्ष में थे कि समस्त गृहस्थों को पर्याप्त गोचर भूमि मिलनी चाहिए, जिससे गोपालन प्रत्येक भारतवासी के लिए सुलभ हो, इससे गोसंवर्धन में आशातीत सफलता संभव है। साथ ही मालवीय जी स्वयं गायों को विक्री के लिए मेलों में भेजने के भी प्रबल विरोधी थे। वे कहते थे कि दुराचारी मनुष्य भी जब किसी स्त्री को माँ कहता है, उसी समय उसकी दृष्टि में पवित्रता आ जाती है। किसी को माता कहने का तत्काल ही यह अर्थ है कि उसे पवित्रता की दृष्टि से देखा जाए।

राजा विराट के समक्ष सहदेव ने अपना परिचय सम्राट युधिष्ठिर के यहाँ गौसंरक्षक के रूप में दिया, जिनका काम गायों की गणना और उनकी देखभाल करना था। पाण्डवों की गायों की विशाल संख्या, उनका वर्गीकरण, गणना और देखभाल की व्यवस्था का परिचय उन्होंने राजा विराट के समक्ष इस रूप में दिया — **''युधिष्ठिर के पास गायों के आठ लाख वर्ग थे और प्रत्येक वर्ग में सौ–सौ गायें थीं, इनसे भिन्न प्रकार की गायों के एक**

लाख वर्ग तथा तीसरे प्रकार की गायों के इनसे दुगने अर्थात दो लाख वर्ग थे। पाण्डवों की इतनी गायों का मैं गणक तथा निरीक्षक था। वे लोग मुझे तंतीपाल कहा करते थे। गाय की मुझे इतनी सूक्ष्म पहचान है कि चारों ओर दस–दस योजन की दूरी में जितनी गायें हों उतनी भूत, वर्तमान, भविष्य में जितनी संख्या थी, और होगी, उसे बतला सकता हूँ। गायों के संबंध में तीन कालों में होने वाली ऐसी कोई बात नहीं है जो मुझे ज्ञात न हो। महाराज युधिष्ठिर मेरे इन गुणों से भलीभाँति परिचित थे, इसलिए वे मुझ पर सदा संतुष्ट रहते थे। जिन–जिन उपायों से गायों की संख्या शीघ्र बढ़ जाती है और इनमें कोई रोग नहीं होता, वह सब मुझे ज्ञात है। इसके अतिरिक्त उत्तम लक्षण वाले उन नंदियों की भी मुझे पहचान है जिनके मूत्र को सूँघ लेने मात्र से वंध्या स्त्री भी गर्भ धारण करने योग्य हो जाती है।

''येषां मूत्र मुपाघ्नाय
अपि वन्ध्या प्रसूयते''

(विराट० १०९१४)

सहदेव द्वारा कथित विवरण से ज्ञात होता है कि उस युग का गौ–लक्षण और गौ–संरक्षण विज्ञान अत्यन्त विकसित था और बड़े–बड़े राजाओं के यहाँ इसकी विशेष व्यवस्था रहती थी। राजा विराट ने सहदेव को पशु–पालकों के साथ अपनी ही गौओं के संरक्षण का भार सौंपा। राज्याश्रयी गोपालक पशु–पालन में ही नहीं, युद्ध कला में भी निपुण होते थे। महाभारतकालीन गौ–सम्पदा का महत्व तथा गौ–रक्षण व्यवस्था का ऐतिहासिक प्रमाण

राजा विराट की गौशाला है। दृति– कण्ठ और कुकुद पृष्ठ (गलकंबल लड़ली और कूबड़ से युक्त) सुपुष्ट गायों को सुपात्र के प्रति सविधि देने का अद्भुत माहात्म्य है। गौ राष्ट्र की महत्वपूर्ण सम्पत्ति समझी जाती थी तथा इसकी अस्मिता और गरिमा का प्रश्न इससे जुड़ा हुआ था।

गोवंश आज व्यावहारिक उपयोगिता की दृष्टि से भौतिक तुला पर तौला जा रहा है, किन्तु स्मरण रहे कि आज का भौतिक विज्ञान गोवंश की उस सूक्ष्मातिसुक्ष्म परमोत्कृष्ट उपयोगिता का पता ही नहीं लगा सकता जिसे भारतीय शास्त्रकारों ने अपनी दिव्य दृष्टि से प्रत्यक्ष कर लिया था। गोवंश की धार्मिक महानता उसमें जिन सूक्ष्मातिसूक्ष्म कारण–रूप तत्वों की प्रखरता के कारण है, उनकी खोज और जानकारी के लिए आधुनिक वैज्ञानिकों के भौतिक यन्त्र सर्वथा स्थूल (अपर्याप्त) ही रहेंगे। यही कारण है कि आज का प्रौढ़ विज्ञान–वेत्ता भी गोमाता के रोम–रोम में देवताओं के निवास का रहस्य और प्रातः गौ–दर्शन, गौ–पूजन, गौ–सेवा आदि का वास्तविक तथ्य आत्मसात करने में असफल ही रहता है। गौ धर्म का धार्मिक महत्व भाव जगत से सम्बंध रखता है और वह या तो **ऋतम्भरा प्रज्ञा द्वारा अनुभव गम्य है अथवा शास्त्रीय प्रमाण द्वारा बोधगम्य।** भौतिक यंत्र अपर्याप्त ही हैं। हत्या आदि हिंसक उपायों द्वारा गोवंश का ह्रास करना धार्मिक और आर्थिक दोनों ही दृष्टियों एवं राजा–प्रजा दोनों के लिए सर्वथा हानिकर है। अतः ऐसी भयंकर प्रथाओं को पूर्णतः रोकने का प्रयत्न सभी को मिलकर करना चाहिए। जब तक केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारें इसके लिए कृत संकल्प नहीं होतीं, तब तक सन्तोषजनक परिणाम असम्भव ही प्रतीत होता है। इसके लिए देश व्यापी यथेष्ट प्रयत्न होने चाहिए।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि

गोहत्या को पूर्णतः प्रतिबंधित करना है तो आज के जनमानस के चक्रवर्ती नरेन्द्र दिलीप के शब्द संकल्प को उपयोग में लाना ही समीचीन होगा, जिन्होंने गौ–रक्षा के लिए अपना कमनीय कान्त युवा शरीर ही सिंह के लिए अर्पण कर दिया और कहा कि **क्षत से त्राण करने के कारण ही क्षत्रिय शब्द संसार में रूढ़ हुआ है, यदि मैं नंदिनी गौ की रक्षा नहीं कर सका तो क्षत्रिय शब्दार्थ के विपरीत आचरण तथा राज्य एवं प्राणियों की निन्दा से मिले इन प्राणों से मुझे कोई प्रयोजन नहीं।** दिलीप ने सिंह से यह भी कहा था कि जितनी कृपा आप मेरे भौतिक शरीर पर कर रहे हैं, उतनी कृपा मेरे यशः शरीर पर क्यों नहीं करते? मेरे देखते–देखते यदि नंदिनी गौ की हत्या हुई तो सूर्यवंश की कीर्ति में कलंक की कालिमा लग जाएगी। इससे बेहतर गौ–रक्षा का अन्य कोई उदाहरण हो ही नहीं सकता। इसी में, भारत और भारतीय सभ्यता का गौरव तथा सच्चा स्वार्थ निहित है।

एक और कटु सत्य, जो कलियुग में मजबूती से निखर कर आया है, आयुर्वेद और आधुनिक विज्ञान के अनुसार स्वास्थ्य एवं रोग निवृत्ति के लिए देशी नस्ल की गौ के दूध, दही, मठ्ठा, मक्खन, घृत, मूत्र, गोबर आदि पंचगव्य का अत्यन्त उपयोग है। **स्व. लाल बहादुर शास्त्री के अनुसार देश में लाखों एकड़ भूमि ऐसी है जहाँ ट्रेक्टरों का प्रयोग नहीं किया जा सकता, अतः भारतीय कृषि की यह अनिवार्य अपेक्षा है कि देश में पर्याप्त मात्रा में उत्तम खाद एवं उत्तम बैल उपलब्ध हों। भूमि की उर्वराशक्ति को बनाये रखने हेतु भी उत्तम खाद की अनिवार्यता है। रासायनिक खाद भूमि को जीवांश प्रदान नहीं करती। पृथ्वी माता का प्राकृतिक खाद प्राप्ति का अधिकार छीन लेने से वह विद्रोही हो गयी है।** फलस्वरूप अस्वस्थ भूमि से उत्पन्न अन्न और चारा भी दूषित उत्पन्न होगा, जिससे मनुष्यों और पशुओं के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। अतः भारत की कृषि–अर्थ–व्यवस्था की उन्नति के लिए गौ–वंश का सम्यक संरक्षण और संवर्धन परम आवश्यक है। संविधान सभा में 19 नवम्बर 1947 के संकल्प के अन्तर्गत गठित गौ–रक्षण एवं गौ –संवर्धन विशेषज्ञ समिति की राय में किसी भी अवस्था में भारत में गौ–हत्या होना वांछनीय नहीं है। कानून द्वारा गौ–हत्या बंद हो जानी चाहिए। भारत की सुख– समृद्धि अधिकांशतः गौ–वंश के ऊपर निर्भर है। भारत की आत्मा को तब तक संतोष नहीं होगा, जब तक पूर्णतः गौ–हत्या बंद नहीं हो जाएगी और गौ–वंश की वर्तमान दीन–हीन दशा को सुधारा नहीं जायेगा। इस प्रस्ताव पर तत्काल ही सरकार द्वारा अक्षरशः अमल किया जाना चाहिए था, परन्तु दुर्भाग्य से विगत अठत्तर वर्षों में महाराष्ट्र के संत गौ–भक्त चौड़े महाराज, महात्मा गाँधी, आचार्य काका साहेब कालेलकर, संत विनाबाजी, श्री बालजीभाई देसाई, माता जानकीदेवी बजाज, सेठ जमनालाल बजाज, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जी, सेठ घनश्यामदास बिड़ला जैसे महापुरुषों के साथ–साथ देश के सर्वोच्च धर्मपीठों के जगदगुरु शंकराचार्य, संत–महात्मा, विद्वान, राजा–महाराजा एवं सद्गृहस्थों आदि के अथक प्रयासों के बावजूद भी गौ–रक्षण–संवर्धन की बात कहना भारतमाता के प्रति मात्र धोखा ही सिद्ध हुआ। इसके पश्चात् भी श्री करपात्रीजी महाराज के कुशल संचालन में पुरी के जगदगुरुशंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ ने 73 दिन के उपवास के साथ महत्वपूर्ण

आन्दोलन जारी रखा था। तत्पश्चात आचार्य विनोबाजी के सहयोगी सर्वोदयी कार्यकर्ताओं आदि ने भी अपना अनशन जारी रखा, किन्तु तब भी गौ–रक्षा और सम्पूर्ण गौहत्या–बंदी कानून का प्रश्न जैसा था, वैसा ही लटका रह गया। भारत विभाजन के बाद भी मथुरा, वृन्दावन, बम्बई, अहमदाबाद सहित राजधानी दिल्ली में गौ–रक्षा आन्दोलन में स्वामी अखंडानन्द जी महाराज, गौ–भक्त श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी महाराज सहित लाला हरदेवसहायजी एवं पण्डित चैतन्यदेवजी शास्त्री का सतत योगदान भी उल्लेखनीय रहा है।

आज स्वराज्य प्राप्त हुए इतना समय हो गया, इस धर्म–प्राण देश में नित्य प्रति हजारों गायें काटी जा रही हैं, इससे बढ़कर भला घोर पाप की पराकाष्ठा और क्या होगी ? स्वतन्त्र भारत में गौ–हत्या का काला कलंक ही मानवता का विनाश करने के लिए पर्याप्त है। जो राष्ट्र गौ–रक्षा में प्रमाद करता है, वह इस संसार में श्री और यश से हीन हो जाता है। जब से भारत भूमि में गौ–संहार होने लगा है, तभी से हम भारतीय नाना प्रकार के रोग शोकादि विविध कष्टों से पीड़ित हो रहे हैं। अतः गौ जाति का ह्रास हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म का ह्रास है। हमारे गौ–वंश की संख्या और गुणों की दृष्टि से जो भयानक ह्रास हो रहा है, उसका शीघ्रातिशीघ्र प्रतिकार करना ही चाहिए। इसलिए सभी दृष्टि से गौ–वंश की रक्षा परम आवश्यक है।

हमें गौओं की दशा को सुधारने, उनकी नस्ल की उन्नति करने और उनका दूध बढ़ाने तथा इस प्रकार देश के दुग्ध उत्पादन में वृद्धि करने का भी पूरा प्रयत्न करना चाहिए। गायों, बछड़ों एवं बैलों की हत्या रोकने तथा उन पर किये जाने वाले अत्याचारों को बंद करने के लिये कानून बनाने ही होंगे और विधर्मियों को भी गौ की परम उपयोगिता बतलाकर गौ जाति के प्रति उनकी सहानुभूति एवं सद्भाव का अर्जन करना चाहिए। जिस देश में कभी दूध और दही की एक प्रकार से नदियाँ बहती थीं, उस देश में असली दूध मिलने में कठिनाई हो रही है–यह कैसी विडम्बना है। कुछ मुस्लिम शासकों सहित हमारे राजाओं–महाराजाओं ने राजाज्ञा निकालकर गौ–हत्या बंद कराई थी, जो विशेष उल्लेखनीय है। इसके अनंतर मराठा और सिक्खों का राज्य तो मात्र गौ–ब्राह्मण–हितार्थ ही हुआ था। हमें चाहिए, हम संगठित रूप से समस्त भारतवर्ष में गौ–रक्षार्थ रचनात्मक दृढ आन्दोलन उपस्थित करें और प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकार से भी गोवंश रक्षार्थ प्रार्थना करें।

वर्तमान में अराजक और शोषक तत्वों से इन गौशालाओं को सुरक्षित रखने की आवश्यकता के साथ ही गायों को देश में उत्तम कोटि के साँड़ों के द्वारा उन्नत करना भी आवश्यक है। डेरियों में गाय का दूध नहीं लिया जाता, भैंस का लिया जाता है। इस कारण देश में गोपालन अनार्थिक बनता जा रहा है। सरकार ने विदेशी सांड़ों से देशी गायों को प्रजनन कराना शुरू किया है। पहले ग्रामों में बलिष्ठ सांड़ (बिजार) रहते थे। उनसे गायें फलतीं थीं। आज गायों को कृत्रिम रेतन केन्द्रों में ले जाना पड़ता है। जहाँ प्रायः जर्सी आदि विदेशी सांड़ों के वीर्य की पिचकारी देकर गायों को गाभिन किया जाता है। विदेशी नस्ल की गायें भले ही थोड़ा दूध अधिक दें, परन्तु न तो वह दूध भारत की गायों के दूध के समान उपयोगी एवं पौष्टिक होता है और न उसके बछड़े खेती के काम आ पाते हैं। लेकिन पूर्व सरकार देश में दूध का उत्पादन बढ़ाने के लिए क्रॉस ब्रीडिंग (संकर प्रजनन) पर सारी शक्ति लगा रही थी। यह क्रॉस ब्रीडिंग हानिकारक था और इसके विरुद्ध जनमत जाग्रत होना चाहिए। हमें अपनी देशी गायों की नस्ल को सुधारना चाहिए। उनसे हमें उत्तम दूध भी मिलता है और उनके बछड़े भी बढ़िया बैल होते हैं। **प्रकृति में माँ वसुंधरा का, मानवता में जननी का, सरिताओं में भागीरथी का, देवों में भगवान पद्मनाभ विष्णु का, नक्षत्र मण्डल में भगवान वृहस्पति का, ऋषियों में अगस्त्य का, देवियों में भगवती दुर्गा का तथा वृक्षों**

में आम का जो स्थान है, वही स्थान भागवतीय परम्परा में गोमाता का है।

इस सन्दर्भ में कौटिल्य के अर्थशास्त्र में गौ–पालन और गौ–संरक्षण के वर्णन का उल्लेख समीचीन होगा, जिसमें गौ घातक को दण्डनीय कहा गया है। सम्राट अशोक ने प्राणी हत्या के साथ ही गौ–हत्या की सख्त मनाही की थी। गोवंश की प्रतिष्ठा तो भारत में यूनानी नरेश सेल्यूकस (ईसवी पूर्व 300–281) ने भी की थी। उसने अपने सिक्कों पर सींगवाला बैल बनवा रखा था। गौ–रक्षा को देशव्यापी अभियान बनाने का कार्य तो मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद शुंग ब्राह्मण शासकों ने अपने 35 वर्ष के शासन में किया था।

वर्तमान में भारत सरकार की जो गौ–संवर्धन नीति चल रही है, वह केवल दूध और गोवंश संरक्षण –संवर्द्धन पूर्ण सर्वांगी होना चाहिए। आज भी हमारे देश में उत्तम नस्लों के अच्छे सांड़ मिलते हैं, उन्हें नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। विदेशी नस्लों के सांडों से क्रॉस ब्रीडिंग नहीं करानी चाहिए, सदैव भारतीय नस्लों के सांड़ों से ही अप–ग्रेडिंग करानी चाहिए, जिससे परिणाम अच्छे आयेंगे। भारत में कुछ नस्लें प्राचीनकाल से चलती आ रही हैं, हजारों वर्षों के प्रयत्न व जलवायु के कारण कुछ नस्लें स्थिर हुई हैं, जो सर्वांगी हैं। इन मान्य नस्लों का विकास भारतीय नस्लों से सिलेक्टिव ब्रीडिंग या अप ग्रेडिंग के जरिये किया जाये तो उनके स्थाई गुणों को बरकरार रखते हुये दूध और बैल शक्ति दोनों की वृद्धि हो सकेगी। क्रॉसब्रीडिंग करके भारतीय देसी उन्नत नस्लों के स्थाई गुणों को नष्ट करना गोवंश तथा देश दोनों के लिए हानिकर है। इस बात को हमारी सरकार को राष्ट्रीय योजना में स्थान देना ही चाहिए। साथ–ही–साथ भारतीय जनमानस थोड़ा सा प्रयास करें तो गौ–संवर्धन तीव्र गति से सम्भव हो सकता है। स्थानीय लोगों द्वारा आसानी से उपयोग किये जाने वाले कुछ सुझाव निम्नवत् हैं :–

- ❖ क्षेत्र के बूढ़े और बीमार गोवंश के संरक्षण की व्यवस्था।
- ❖ प्रजनन योग्य अलग– अलग नस्लों के गोवंश के संवर्धन की व्यवस्था।
- ❖ स्थानीय स्तर पर चरागाहों का विकास कराया जाना।
- ❖ चारा वृक्षारोपण एवं हरे चारे का पर्याप्त उत्पादन होना।
- ❖ चारे के भण्डारण की समुचित व्यवस्था।
- ❖ गौ–रस भण्डारण के मार्फत दूध वितरण और घी, मक्खन, पनीर आदि गौ–रस निर्मित पदार्थों के उत्पादन व वितरण की अनुकूल सुविधाएं।
- ❖ गोबर–गोमूत्र से वायोगैस, ऊर्जा, जैविक उर्वरक, रासायनिक विषाक्तता से मुक्त कीटनाशक का प्रयोग किया जाना सुनिश्चित हो।
- ❖ शुद्ध आयुर्वेदिक औषधियों, बीजों को उपचारित और संस्कारित करने की विधियों आदि को उपयोगी बनाया जाना चाहिए।
- ❖ वैज्ञानिक पद्धति से देशी नस्ल के गौ–संवर्धन कार्य, शोध, अनुसन्धान, प्रयोग, परीक्षण आदि कृषि विश्वविद्यालयों तथा पशुपालन महाविद्यालयों को साथ जोड़कर प्रोत्साहित करने का विभिन्न स्तरों पर उपक्रम हो।
- ❖ विभिन्न स्थानों में गोवंश चिकित्सालयों की स्थापना एवं योग्य पशु चिकित्सक तैयार हों।
- ❖ भारतवासी धर्म प्रेमी हिन्दुओं के हृदयों में समय–समय पर गौ–रक्षार्थ गौ–यज्ञों और गौ–महोत्सवों के आयोजनों को प्रेरित करने की योजना बनाना, जिससे स्वाभाविक तौर पर गौ–यज्ञों, गौवंश संरक्षण, गौवंश– संवर्धन, गौ महत्व प्रतिष्ठापन और गौ संगतिकरण आदि में विशेष लाभ हो सके।
- ❖ स्थानीय स्तर पर गोवंश के चमड़े इत्यादि से बनी हुईं वस्तुएं आदि का व्यवहार न करने की शपथ करना–कराना।
- ❖ चमड़े आदि के व्यापार से आजीविका अर्जन के स्थान पर अन्य वस्तुओं के व्यापार में संलग्न होना।
- ❖ यथासाध्य देशी गायों के ही दूध, दही, घी आदि का व्यवहार करना/कराना और कम से कम एक गाय का पालन अवश्य करना/कराना।
- ❖ गोवंश रक्षा के लिए सभी भारतीय प्रतिदिन अपने– अपने इष्टदेव भगवान से आर्त प्रार्थना करें और अपनी आजीविका में से शास्त्र सम्मत दशांश निकालने की परम्परा का निर्वाह करते हुए गौसेवा में दान अवश्य करें अथवा प्रतिदिन प्रत्येक व्यक्ति मात्र एक रुपया ही इस निमित्त अर्पित करें।

इस सम्बंध में हमारे **मलूक पीठाधीश्वर स्वामी श्री राजेन्द्र दास देवाचार्य जी महाराज** का वक्तव्य बहुत महत्वपूर्ण है, जिन्होंने अपनी गौशालाओं में अच्छे तरीके से गायों की अच्छी देखभाल करते–कराते हुए गायों के दूध में बढ़ोत्तरी दर्ज की। उनका प्रत्यक्ष अनुभव है कि अच्छे संवर्धन के बाद गायों का दूध काफी बढ़ सकता है। सब दृष्टि से राष्ट्र की शक्ति गौपालन और गौसंवर्धन में लगेगी तभी देश आगे बढ़ सकेगा। अतः प्रत्येक भारतीय को एक गाय पालनी ही चाहिए। यह मुश्किल नहीं, पूर्णतः सम्भव है। अगर आपको साक्षात् अनुभव करना है तो **आप राजस्थान के जैसलमेर, बीकानेर जैसे जिलों में जाकर देख सकते हैं जहाँ तमाम हिन्दू और मुसलमान भाई–बहन पीढ़ियों से गौ–पालन और गौ–संवर्धन के कार्य में मनोयोग से लगे हैं!! गौपालन ही उनका प्रमुख उद्योग है जो उनके पूर्वजों के काल से निरन्तर जारी है। आज भी उनकी व उनके परिवार की आजीविका बहुत इत्मिनान से चल रही है।** ऐसा नहीं कि उनके परिवार आधुनिक सुख–सुविधाओं से वंचित हैं। मूल बात यह है कि उन्हें गौ–पालन के कार्य में जो सुख मिलता है, वह दूसरे व्यवसाय में अनुभव में नहीं आता। इसलिए पीढ़ियों से निरन्तर संलग्न हैं। प्रभुकृपा से, जैविक खेती का महत्व बढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में बूढे और अनुत्पादक गौ–वंश को भी गौ–सदन में रखकर उनके गोबर–गोमूत्र से ही भारत भर की जैविक खाद की जरूरत पूरी हो जाएगी और गौ–सदन भी स्वावलम्बी बन सकेंगे। गौ–रक्षा की न्यूनतम शर्त है कि हमारे घरों में गौ दुग्ध व गौघृत का ही उपयोग होने लगे। देखते–देखते ही घर–घर में गायें पलने लगेंगीं और मानव का स्वास्थ्य भी सुधरेगा, आपसी सद्भाव बढेगा और गौहत्या बंद होने लगेगी। प्रत्यक्ष अनुभव हेतु आप गौभक्त पूज्य श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी महाराज द्वारा स्थापित संकीर्तन भवन न्यास वृन्दावन की गौशालाओं में, जहाँ आचार्य विनय त्रिपाठीजी व भागवताचार्य श्री गोपाल भैयाजी के निःस्वार्थ प्रयासों से, इस प्रकार लाड़–प्यार से गौ–वंश को स्वच्छ और पवित्र वातावरण में रखा जाता है, जिससे गौमाताएँ प्रसन्न रहें और आश्रम के प्रत्येक सेवाधारी की भक्ति पुष्ट हो।

मलूक पीठाधीश्वर द्वारा संचालित गोवर्धन क्षेत्र के पारासौली गाँव में **सूरश्याम गौशाला** और गोवर्धन से आगे डीग मार्ग में स्थापित **जड़खोर गौशाला** का भी अवलोकन आप कर सकते हैं। **मेवाड क्षेत्र में श्रीनाथद्वारा स्थित आदर्श नाथूवास गौशाला भी उल्लेखनीय है।** वि.स. 1728 में, श्रीनाथजी के श्रीविग्रह को श्रीनाथद्वारा ले जाये जाते समय, नंदराय जी के घर के गौवंश की घूमर गाय की वंशज कतिपय गौमाताऐं भी ब्रजमंण्डल से साथ आयीं। श्रीनाथजी की सेवा में गौ की प्रभुता बढ़ने लगी, असंख्य अन्य गौमाताएं भी भेंट में आने लगीं। नगर से तीन किलोमीटर दूर नाथूवास नामक स्थल पर गौशाला बनी। नगर की संकुचितता देखकर मन्दिर के तिलकायत श्रीमानों द्वारा नाथद्वारा के आसपास बारह गौशालाएं और बनवा दी गयीं। नाथद्वारा का वैभव सिद्ध करता है कि यदि गौ–पालन को वास्तविक पोषण की दृष्टि से देखा जाये तो व्यावसायिक शोषण को अवश्य ही किसी सीमा तक कम किया जा सकता है।

राकेश चन्द्र चतुर्वेदी

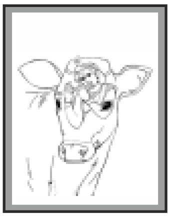

गाय पर्यावरण के लिए वरदान

हम भारतीय ऐसी संस्कृति के वाहक हैं जिसने धरती और अपने अस्तित्व के बीच में गाय को रखा। हमारे पूर्वज गाय के बिना जीवन और इस विश्व की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। किन्तु आज वातावरण इतना बदल गया है कि हमारा जीवन अधिक–से–अधिक मशीन केन्द्रित हो गया है। वर्तमान मशीनीकृत औद्यौगिक वातावरण में हमने गाय को हृदय और जीवन के एक कोने में धकेल दिया है। यदि हमें शान्तिपूर्वक जीना है तो अपने जीवन से खो गयी उस सम्पदा यानी गाय को पुनः स्थापित करना पड़ेगा जो हमारे जीवन का आधार हुआ करती थी।

हमारे ग्रन्थों में बताया गया है कि धन की देवी लक्ष्मी गाय के गोबर में निवास करती है। इसलिए कहा गया है कि ***'गोमये वसते लक्ष्मीः'***। यह धन, उपजाऊपन और स्वास्थ्य का प्रतीक है। वह रोगहर्ता, चलता–फिरता मंदिर व चिकित्सालय है। हमारी संस्कृति में सदैव रचनात्मक सहअस्तित्व और त्याग की बात कही गयी है। गाय इन सभी गुणों का जीता–जागता उदाहरण है।

देशी गाय के कारण ही हमारे देश में कृषि संस्कृति तथा सभ्यता का विकास संभव हो सका है। हजारों साल से गोवंश आधारित जैविक कृषि ही हमारे सम्पोषण का आधार रही है। हमारी संस्कृति गाय को शोधक मानती है न कि प्रदूषक। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी लोग गाय के गोबर को मिट्टी के गारे में मिश्रित करके घरों की दीवारों और झोपड़ी के फर्श को लीपते–पोतते हैं। इसका कारण है गाय के गोबर का कीटाणुनाशक तथा विकिरणरोधी गुण। इस लेपन का दूसरा आश्चर्यजनक पहलू यह है कि यह मनुष्य के लिए तो लाभदायक है ही, साथ ही इससे अन्य जीवाणुओं जैसे चींटियों, मक्खियों तथा अन्य कीट–पतंगों को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचता है। इस प्रकार पर्यावरण का संतुलन गोमाता का सबसे बड़ा गुण है। वह किसी को नुकसान नहीं, बल्कि सभी को फायदा पहुँचाती है। अकसर देखा जाता है कि गाय के गोबर से बने उपलों को ईंधन के रूप में जलाया जाता है। उससे उत्पन्न धुआँ मच्छरों को मारता नहीं, भगाता है। इससे यह सिद्ध हो चुका है कि गाय अंहिसा की सबसे बड़ी अनुयायी है।

देशी गाय के घी से बना पंचगव्य मनुष्य के लिए सबसे बड़ा

वरदान है। गाय के गोबर को ईंधन व खाद के रूप में तथा गोमूत्र को कीटनाशक के रूप में अत्यन्त प्राचीन काल से ही भारतीय किसान प्रयोग करते आ रहे हैं। इसके अलावा दूध, घी तथा मक्खन मनुष्य के पोषक तत्व रहे हैं लेकिन आज किसानों ने गोवंश आधारित खेती को छोड़कर मशीनों, रासायनिक खाद तथा रासायनिक कीटनाशकों से खेती करनी शुरू की है जिससे खेती का नुकसान व बीमारियों से किसानों की अन्य परेशानियाँ बढ़नी शुरू हुई हैं। आज खेती की मंहगी पद्धतियों के कारण ही किसान कंगाली के कगार पर पहुँचकर आत्महत्या जैसे खतरनाक कदम उठाने के लिए बाध्य हुआ है।

पश्चिमी देशों द्वारा इस बात का सतत् दुष्प्रचार किया जा रहा है कि गाय अपनी श्वांस के माध्यम से मीथेन गैस छोड़कर सम्पूर्ण पर्यावरण को प्रदूषित कर रही है जिससे ग्रीन हाउस गैसों का दवाब बढ़ता है। वैज्ञानिक शोध में पाया गया है कि सिर्फ विदेशी नस्ल की गायें ही, (जिन्हें वैज्ञानिक भाषा में 'बास टोरस' कहते हैं), अपने गोबर के माध्यम से हानिकारक कीटाणु पैदा करती हैं, जिससे बहुत अधिक मीथेन गैस पैदा होती है। इसके अलावा एक और झूठ को बार–बार प्रचारित किया जाता है कि भारतीय नस्ल की गाय बहुत अधिक चारा व पानी पीकर भी बहुत कम दूध देती है। इस सोच में मुख्यतः दो भ्रांतियां हैं। एक, पश्चिम जगत गाय को सिर्फ एक आर्थिक इकाई के रूप में देखता है, वह गाय को सिर्फ दूध और मांस के रूप में आंकता है। दूसरा, वह जर्सी आदि नस्लों व देशी गाय के अन्तर को स्वीकार नहीं करता।

हम भारतीय गाय को केवल एक उपयोगी जानवर नहीं मानते, बल्कि उसे माँ मानते हैं जो जीवनभर हमारा पालन–पोषण करती है। गाय भारतीयों के लिए एक संस्कृति है, उसके साथ हमारा सम्बन्ध आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, भावनात्मक और आर्थिक है। गाय पर्यावरण संतुलन का आधार है, इसकी पुष्टि हेतु हमें किसी आँकड़े अथवा शोध की आवश्यकता नहीं है। अनादिकाल से गाय मनुष्य व प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्वक रहती आयी है, इससे स्पष्ट प्रमाण मिलता है कि धरती पर वह मनुष्य से अधिक समय तक जीवित रहने वाली है।

बैल की तुलना अगर ट्रैक्टर से करें तब हम देखेंगे कि बैलों के माध्यम से खेत की जुताई पर मिट्टी की ऊपरी परत सौम्य बनी रहती है। इसके अलावा बैल का गोबर व मूत्र मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं, इसके विपरीत ट्रैक्टर द्वारा जुताई की गई मिट्टी कठोर हो जाती है। ट्रैक्टर की जुताई से वायु व ध्वनि प्रदूषण भी होता है। शोध में पाया गया है कि एक भारतीय नस्ल की देशी गाय के दिन के गोबर से प्रति वर्ष 4500 लीटर बायो गैस का उत्पादन किया जा सकता है। रसोई में बायो गैस के प्रयोग से जलावन हेतु लकड़ी के उपयोग में कमी से देश में प्रतिवर्ष लगभग छः करोड़ अस्सी लाख रुपये मूल्य की लकड़ी को बचाया जा सकता है। जब इस प्रकार के वैज्ञानिक तथ्य हमारे सामने हैं तो हम कैसे गाय को पर्यावरण की शत्रु मान सकते हैं?

'यजुर्वेद' में गाय को आघ्नेय (अवध्य), अर्थात् ऐसा प्राणी जिसकी हत्या नहीं की जानी चाहिए, माना गया है। वह जीवन दायिनी है। पर्यावरण संतुलन तभी कायम रह सकता है जब मनुष्य ध्यान रखे कि वह इस धरती का ही एक अभिन्न अंग है, उसे फिर से इस धरती के साथ जोड़ना होगा। पर्यावरण संरक्षण के लिए आध्यात्मिक जागरूकता निर्माण करने की जरूरत है। क्योंकि इसके माध्यम से स्वयं को पेड़, पौधों, आकाश, गाय तथा प्रकृति में उपलब्ध प्रत्येक कण–कण से जोड़ना है। अतः उक्त विवेचना के आधार पर निश्चित रूप से कहा जाता है कि गाय पर्यावरण की पोषक है तथा उसके लिए सदैव से वरदान रही है।

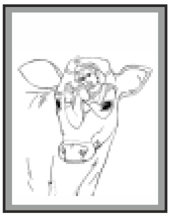

अन्धे गोवंश के प्रति पुत्रभाव

अंधी गोमाता का विलक्षण वत्सल प्रेम

एक साधारण और कम पढ़े–लिखे किसान के गोवंश–प्रेम की एक अनोखी सत्य कथा अभी हाल ही में प्रकाश में आयी है। महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के वलुज नामक गाँव में एक किसान है, नाम है **इन्द्रसेन मोटे।** इनके पास खेती करने के लिये कई बैल हैं, जिनमें सोन्या नाम का एक बैल भी है, उसका जन्म इन्द्रसेन के यहाँ की एक गाय से हुआ था, अतः वह बचपन से ही उसका दुलारा बन गया था। दुर्भाग्यवश सिर्फ ढाई साल की उम्र से ही उसकी आँखों में आँसू बहने शुरू हो गये, यह रोग धीरे–धीरे आँखों के कैंसर के असाध्य रोग में परिणत हो गया। पशु–चिकित्सक के अनुसार पशुओं को लम्बे समय तक सूर्य की तेज रोशनी में रहने के कारण अकसर ऐसा रोग हो जाता है। इलाज के दौरान उसने अपनी दोनों आँखें एक–एककर खो दीं और हमेशा के लिये अन्धा हो गया। पशु–चिकित्सक ने उसकी दोनों रोग पीड़ित आँखें भी निकाल ली थीं और उसकी आँखों की पलकों को भी आपस में सीं दिया था। इन्द्रसेन ने उसके इलाज के लिये हजारों रुपये खर्च किये थे, लेकिन सब बेकार। अपने प्रिय बछड़े की ऐसी अवस्था देखकर उसे बहुत पीड़ा हुई, जो कि दिनों दिन असह्य होती गयी। एक अन्धे बैल को पालना और उससे कृषि कार्य करवाना असम्भव था, अतः गाँव वालों ने इन्द्रसेन को उसे बेचकर इस मुसीबत से त्राण पाने की सलाह दी, परंतु धन्य हैं इन्द्रसेन, उन्होंने ऐसा करने से न सिर्फ साफ मना कर दिया, बल्कि सोन्या में अपने पुत्र की भावनाकर उसकी जीवन भर सेवा सुश्रुषा करने का संकल्प कर लिया। वह भली भाँति जानता था कि उसे बेचने का अर्थ होगा उसे बूचड़ खाने भेजना और उसकी वहाँ होने वाली दर्दनाक मौत के बारे में सोचकर ही उसका हृदय भर आया। इन्द्रसेन का पूरा परिवार भी उसके इस निश्चय में उसके साथ खड़ा रहा। इन्द्रसेन के पिता भी सालों पहले कैंसर रोग से मृत्यु को प्राप्त हो गये थे, तब वह उम्र में छोटा था और उनकी पर्याप्त सेवा नहीं कर पाया था। इसी कारण इस बार इन्द्रसेन ने सोन्या की पूरी सार–सँभार करने का संकल्प किया। उसकी पत्नी भी सोन्या को अपने पुत्र और परिवार के अभिन्न सदस्य के जैसे ही मानती हैं और पूरे दिन उसकी दैनिक क्रियाओं को अपने हाथों से पूरा करती हैं। उन्हें पूर्ण विश्वास है कि सोन्या से उसकी सेवा के बदले उनके परिवार को हमेशा आशीर्वाद प्राप्त होगा। इन्द्रसेन की पुत्री भी छः साल की उम्र से सोन्या के साथ हँसती–खेलती बड़ी होने लगी। चिकित्सक की सलाह के अनुसार इन्द्रसेन अन्धे सोन्या को भी अपने साथ खेतों में लेकर जाता है और उससे छोटे–मोटे काम करवाता है, ताकि सोन्या को पसीना आये और वह हमेशा स्वस्थ बना रहे। कई लोगों को इन्द्रसेन के ऐसा करने में क्रूरता दिखी, लेकिन इन्द्रसेन यह सब सोन्या की भलाई के लिये ही करता है। फिलहाल सोन्या करीब सोलह वर्ष का हो गया है और अब इन्द्रसेन उससे कोई काम नहीं लेता है। उसका कहना है कि एक बैल की औसत आयु २० वर्ष की होती है, अतः वह चाहता है कि सोन्या अपनी जिन्दगी के शेष बचे दिन आराम और मौज–मस्ती से व्यतीत करे। उसे अत्यन्त सन्तुष्टि है कि सोन्या की वजह से उसकी जिन्दगी में बहुत खुशियाँ आयीं। वर्तमान युग में जब कई लोग अपने आश्रित गोवंश को अगर कोई गम्भीर बीमारी लग जाय, तो उसे या तो छोड़ देते हैं या कसाई के हाथ बेच देते हैं। मैंने स्वयं अपने गाँव में एक गोदुग्ध बेचने वाले व्यक्ति को देखा है, जिसने दूध देना बन्द करने पर अपनी कई गायों को कसाइयों को बेच दिया था। सरल चित्त और साधारण जीवन–यापन करने वाले इन्द्रसेन और उनके पूरे परिवार को कोटि–कोटि नमन, उनकी निःस्वार्थता, मानवता, करुणा, सच्चे और सक्रिय गोवंश प्रेम एवं सेवा की अद्भुत तथा भाव विभोर कर देने वाली मिसाल पेश करने के लिये। ऐसे उदाहरण आज के अति भौतिकवादी युग में बहुत कम देखने को मिलते हैं।

प्रस्तुति – कमलजी लड्ढा

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

COW DUNG IN GREEN TECHNOLOGY
FROM BIOGAS TO ECO-BRICKS

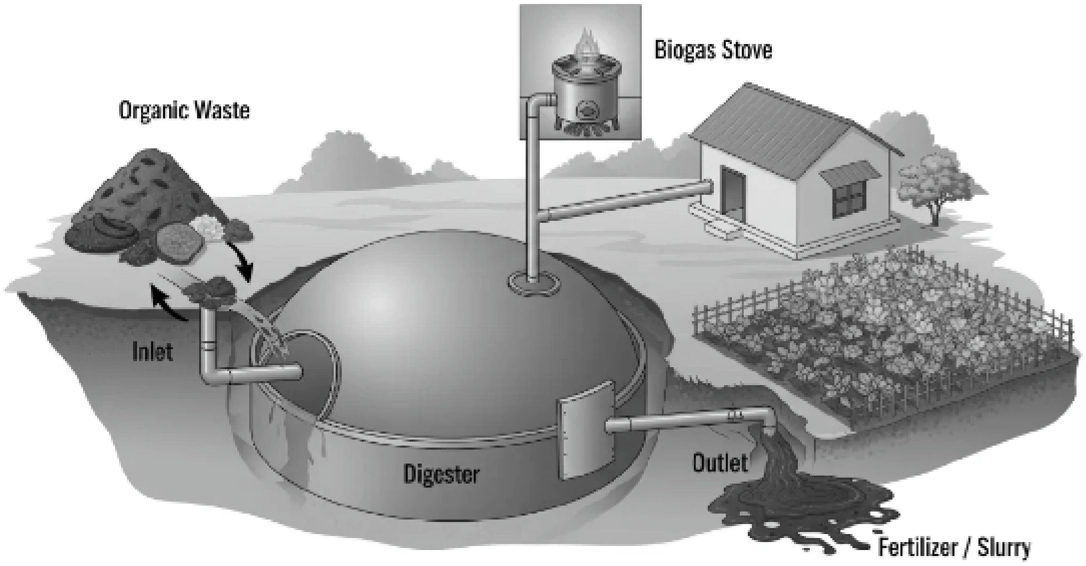

For generations, cow dung has been an inseparable part of Indian rural life. Villages have used it to plaster walls, fuel chulhas (Stoves) and enrich agricultural fields. Though often dismissed as a waste product, science is now proving and endorsing that cow dung is a rich and renewable resource with immense potential in modern green technology. Today, researchers and entrepreneurs are reimagining this traditional material for innovative applications, from producing clean energy to constructing eco-friendly housing. In doing so, they are not only conserving resources but also bridging the gap between age-old wisdom and sustainable innovation.

Cow Dung as a Source of Clean Energy

One of the most prominent breakthroughs in the use of cow dung is in the field of biogas production. Through anaerobic digestion, cow dung can be converted into methane-rich gas that serves as an efficient fuel for cooking, lighting and even electricity generation. This biogas is renewable, carbon-neutral and significantly reduces reliance on fossil fuels and firewood. The slurry left behind after gas extraction becomes an excellent organic fertilizer, returning nutrients to the soil and supporting sustainable agriculture. A single cow can produce enough dung to generate energy for a small household and when this process is scaled across villages, the impact on reducing deforestation and greenhouse gas

emissions is considerable. With modern advancements, artificial intelligence and smart sensors are now being incorporated into biogas systems to monitor fermentation and optimize gas production, making cow dung energy solutions smarter and more reliable.

Eco-Bricks: Building the Future with Tradition

Another remarkable innovation lies in transforming cow dung into eco-bricks for sustainable housing. Researchers in India have developed methods to combine cow dung with soil, clay or natural binders to produce strong, lightweight and thermally insulating bricks. Unlike conventional bricks, which require high-temperature kilns that consume coal and release harmful emissions, eco-bricks made from cow dung are processed at ambient temperature. They are not only affordable but also environmentally friendly, providing a low-carbon alternative to traditional construction materials. Studies have shown that houses built with these bio-bricks remain cooler in summers and warmer in winters, reducing dependence on artificial heating and cooling systems. For rural development programs, cow dung bricks can undoubtedly become a cost-effective and climate-conscious building material, while simultaneously creating an additional source of income for cattle owners.

Expanding Horizons: Diverse Innovations

The use of cow dung in green technology extends beyond energy and housing. Across India, innovative projects are turning cow dung into paper, reducing deforestation while supporting eco-friendly enterprises. In recent years, even paint made from cow dung has been introduced in the market under the name “Prakritik Paint,” which is non-toxic, anti-fungal and affordable. Bio-composites made by blending cow dung with agricultural waste are being tested for use in furniture and packaging. In addition, the role of cow dung in carbon sequestration and climate mitigation is gaining attention, making it a subject of interest not only for environmentalists but also for global policymakers. Each of these applications reflects the versatility of cow dung as a raw material and its ability to replace polluting, non-renewable resources in daily life.

Social and Environmental Impact

The impact of these innovations goes just beyond environmental sustainability. Cow dung technologies do have the potential to transform rural economies by providing farmers and households with new income streams. Selling dung to biogas or eco-brick enterprises offers financial security, especially in regions where small-scale

farming alone cannot sustain families. At the same time, the replacement of firewood with biogas drastically reduces indoor air pollution, which has long been a major cause of respiratory diseases in rural households. Eco-bricks and dung-based paints also make housing and infrastructure more affordable, bridging social gaps and promoting inclusivity. On an environmental level, these innovations reduce deforestation, minimize chemical fertilizer use and cut down on carbon emissions, creating a cycle of sustainability that benefits both people and the planet.

Challenges and Opportunities Ahead

Despite the promise, the road to large-scale adoption of cow dung in green technology is not without hurdles. In many parts of rural India, there remains a lack of awareness about modern applications of cow dung. Technical training is required for operating biogas plants efficiently and infrastructure for mass production of eco-bricks is still limited. Government subsidies and policy support are crucial to encourage farmers and local entrepreneurs to embrace these technologies. Moreover, cultural biases associating cow dung with backwardness need to be addressed through education and awareness campaigns that highlight its ecological and economic value. By combining scientific research with grassroots participation, cow dung can truly emerge as a central player in the green economy.

Hence, Cow dung, long viewed as a simple rural by-product, is undergoing a powerful transformation into a resource of the future. Through innovations such as biogas and eco-bricks, it is providing solutions for clean energy, sustainable housing and climate resilience. Its applications in paper, paint and bio-composites further prove its versatility in shaping a greener world. By integrating traditional knowledge with modern science, India has the opportunity to lead the global movement toward eco-friendly living. The adoption of cow dung technologies is not only a matter of environmental necessity but also a reaffirmation of human values, respect for nature, resourcefulness and balance between human needs and ecological health. In the journey toward sustainability, the cow, once again stands as a guiding force, reminding us that the answers to our greatest challenges often lie in the most ordinary of resources.

Acharya Vivek

COW WEALTH

Our True Wealth, Our Identity

"Cow wealth, elephant wealth, horse wealth, and gemstone mines"

Among these four, cow wealth has been given the highest place. History bears witness that even greater, more priceless, and more revered than elephants, horses, and treasure mines, is cow wealth.

Our ancestors did not see cow wealth merely as an economic asset, but as the very foundation of life. For them, the cow was not just an animal but Gau Mata — a member of the family, a nourisher, and a source of the earth's fertility.

The Importance of Cow Wealth

In the Past Our ancestors' lives revolved around a cow-centered agricultural system. Cow dung and cow urine were used to maintain soil fertility. This natural manure protected crops from pests and increased yields. Applying cow dung slurry to the courtyard purified the surroundings and kept them free from harmful radiation. Sipping fresh cow urine in the morning was considered beneficial for health — scriptures affirm this.

In Bhagavad Gita, Chapter 18, Verse 44, Lord Krishna says: *"Krishi Gaurakshya Vanijyam Vaishya Karma Svabhavajam"* Farming, cow protection, and trade are the natural duties of a Vaishya. Thus, cow wealth was not limited to food and farming — it was at the heart of our economic, social, and spiritual life.

The Present Situation

A Bitter Truth Sadly, today the same cow

wealth is forced to wander on the streets. Desi cows survive on polythene, garbage, and inedible waste.

There are many reasons for this plight, but the biggest is — The farmer abandoned the cow and chose the machine as his companion. Cow dung and urine were replaced by poisonous chemical fertilizers and pesticides. Ignoring the experience and wisdom of our ancestors, we embraced Western farming methods.

The Result

Soil fertility declined, crop quality dropped, farmers' costs rose, and the cow was cut off from our lifeline.

A Do-or-Die Situation

Today, it's time to either wake up or lose both our cow wealth and agriculture. We must reconnect our farmers to the traditions and wisdom of our forefathers. Saving the cow is not just saving an animal — it is saving agriculture, culture, and future generations.

The Solution

Green Fodder, Healthy Cows, Prosperous Farmers. The biggest question in adopting cow rearing is fodder availability. If this issue is solved, farmers can keep cows without hesitation. The sustainable solution is Napier grass. Once planted, it provides green fodder continuously for 15–25 years. Its average cost is less than 50 paise per kilo. It is available all year round.

With year-round green fodder, cows remain healthy and milk production increases. Napier grass reduces farmers' dependence on purchased fodder, gives cows better nutrition, and boosts income through milk.

Our Resolution

Cow Rearing Awareness in Every Village Educating farmers on the benefits of cow dung, cow urine, and natural farming. Providing training and knowledge about Napier grass cultivation in every village. Running cow-rearing awareness campaigns in schools and at the panchayat level. Helping farmers understand that the cow is not only a religious symbol but also their economic backbone.

In Conclusion

Cow wealth is our past, our present, and our future. If we don't save it today, tomorrow our very identity will vanish. Let us all take this pledge together — "If the farmer wakes up, the cow will be saved; if the cow is saved, the nation will be saved."

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं –

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली

खाता नम्बर – 04072010038910 IFSC CODE : PUNB0040710

नोट – शुल्क "भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद" के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011.26174732

pnb punjab national bank

...the name you can BANK upon!

अब आप यूपीआई के माध्यम से भी पत्रिका का शुल्क जमा कर सकते हैं

SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP

9958710672m@pnb

MERCHANT: BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

BHIM | UPI

BHARAT INTERFACE FOR MONEY | UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

गो-पालन करें

1 उत्तम स्वास्थ्य के लिए - गो-पालन करें।
2 सनातन की रक्षा के लिए - गो-पालन करें।
3 जीवनकाल बढ़ाने के लिए - गो-पालन करें।
4 हरियाली की रक्षा के लिए - गो-पालन करें।
5 दीर्घकालीन जीवन के लिए - गो-पालन करें।
6 संस्कारों को बचाने के लिए - गो-पालन करें।
7 धरती की उम्र बढ़ाने के लिए - गो-पालन करें।
8 कॉलेस्टेरोल कम करने के लिए - गो-पालन करें।
9 अवसाद को कम करने के लिए - गो-पालन करें।
10 सस्ते एवं पौष्टिक आहार के लिए - गो-पालन करें।
11 पर्यावरण व्यवस्थित रखने के लिए - गो-पालन करें।
12 डायबिटीज को कम करने के लिए - गो-पालन करें।
13 अंत:करण को पावन करने के लिए - गो-पालन करें।
14 गो-हिंसा के पाप से बचाने के लिए - गो-पालन करें।
15 रक्तचाप को सामान्य रखने के लिए - गो-पालन करें।
16 जीव-जगत एवं स्व-कल्याण के लिए - गो-पालन करें।
17 सात्विक आहार को प्रोत्साहन के लिए - गो-पालन करें।
18 हरियाली एवं ऑक्सीजन बढ़ाने के लिए - गो-पालन करें।
19 अच्छी निद्रा और अच्छे स्वास्थ्य के लिए - गो-पालन करें।
20 समाप्त होते गो-वत्सों के संरक्षण के लिए - गो-पालन करें।
21 मेटाबोलिज्म को व्यवस्थित रखने के लिए - गो-पालन करें।
22 तामसिक आहार को समाप्त करने के लिए - गो-पालन करें।
23 गो-माँ के प्रति सम्मान भाव दर्शाने के लिए - गो-पालन करें।
24 हृदयाघात एवं मोटापे को कम करने के लिए - गो-पालन करें।
25 व्यवहार में शालीनता, प्रसन्नता लाने के लिए - गो-पालन करें।
26 गो-संरक्षण का संदेश प्रचारित करने के लिए - गो-पालन करें।
27 जीवन की कठिनाइयों को कम करने के लिए - गो-पालन करें।
28 अहिंसा परमो धर्म: की अलख जगाने के लिए - गो-पालन करें।
29 व्रत-उपवास की पवित्रता कायम रखने के लिए - गो-पालन करें।
30 विश्व शांति और विभीषिकाओं से बचने के लिए - गो-पालन करें।
31 दीर्घ और स्वस्थ मानवीय जीवन बिताने के लिए - गो-पालन करें।
32 हिंद सभ्यता को प्रचारित-प्रसारित करने के लिए - गो-पालन करें।
33 नैसर्गिक, शांतिमय, आनंदमय जीवन जीने के लिए - गो-पालन करें।
34 धरती को फलदायक और सौम्य बनाए रखने के लिए - गो-पालन करें।
35 जीव मात्र को जीने का अधिकार बनाए रखने के लिए - गो-पालन करें।
36 क्रोध पर विजय पाने व संयम को प्रखर करने के लिए - गो-पालन करें।
37 तन को सबल और मन को निर्मल बनाए रखने के लिए - गो-पालन करें।
38 भय, तनाव, आक्रोश एवं क्रोध का शमन करने के लिए - गो-पालन करें।
39 भारतीय सभ्यता की सहज पहचान बनाए रखने के लिए - गो-पालन करें।
40 कैंसर, लकवा, चर्मरोग जैसी बीमारियों से बचने के लिए - गो-पालन करें।
41 जीओ और जीने दो की भावना का पालन करने के लिए - गो-पालन करें।
42 जीव रक्षार्थ, दया की अखंड ज्योति जलाए रखने के लिए - गो-पालन करें।
43 परस्परोपग्रहो जीवानाम के सिद्धांत का पालन करने के लिए - गो-पालन करें।
44 भारतीय सभ्यता, अस्मिता और धर्म की रक्षा करने के लिए - गो-पालन करें।
45 निरीह, निर्बल व निरपराध गायों को अभय दान देने के लिए - गो-पालन करें।
46 शारीरिक, आध्यात्मिक, मानसिक शांति बनाए रखने के लिए - गो-पालन करें।
47 शारीरिक ताकत मांसाहार से है, इस तर्क को मिटाने के लिए - गो-पालन करें।
48 राम, गोविन्द, महावीर के आदर्शों को अंगीकार करने के लिए - गो-पालन करें।

नवल डागा, बी-314, हरि मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 (राज.), मो: 9460142430

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 अक्टूबर, 2025

विहिप, गोरक्षा विभाग-काशी प्रांत की बैठक

गोहत्या का कलंक मिटाने के लिए हिन्दू समाज को जागृत करना आवश्यक

प्रयागराज। भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद (विहिप) के राष्ट्रीय अध्यक्ष गुरु प्रसाद सिंह ने कहा कि समाज से गोहत्या का कलंक मिटाने के लिए संगठन को जिला प्रखंड एवं ग्राम टोली का गठन कर हिंदू समाज को जागृत करना होगा। हिंदू समाज गोमाता के महत्व को समझ कर गोमाता को अपने खूंटे पर लाएगा, तभी उसकी रक्षा हो सकती है। विहिप के प्रांत कार्यालय केसर भवन में काशी प्रांत के गोरक्षा पदाधिकारियों की बैठक में सात, आठ, नौ अक्टूबर को जयपुर में होने वाली विश्व हिंदू परिषद, गोरक्षा विभाग की राष्ट्रीय बैठक के पूर्व समितियों के गठन का निर्णय लिया गया। बैठक में गोपाष्टमी पूजा, गोवर्धन पूजा, नंदी पूजा, गोवत्स द्वादशी, मकर संक्रांति तथा महाशिवरात्रि पर गोमाता के पूजन का आह्वान किया गया। इस दौरान प्रांत घरेलू उत्पाद प्रमुख का दायित्व सत्यदेव यादव, प्रांत पंचगव्य औषधि प्रमुख पवन को, प्रांत सह कृषि प्रशिक्षण प्रमुख नागेश्वर तथा प्रांत सह गोशाला संपर्क प्रमुख लवलेश बजरंगी को बनाया गया।

बैठक का संचालन विहिप गोरक्षा के प्रांत मंत्री लाल मणि तिवारी ने किया। इस अवसर पर विहिप के केंद्रीय मंत्री व अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख मा. दिनेश जी उपाध्याय ने जिले की मासिक बैठक, गो विज्ञान परीक्षा, गोसंपदा पत्रिका का विस्तार, कार्यकर्ता दायित्व बोध के लिए वर्ग, गांव में गोमाता का हर माह पूजन आदि पर चर्चा की।

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक